ISSN : 2348-7143
February-2019

INDEX

	Title of the Paper	Author's Name	page No.
1	"इक्कीसवीं सदी : हिन्दी साहित्य में महिला लघुकथाकारों	डॉ. सीमा राठौर	05
2	आदिवासियों के नरसंहार की अनकही गाथा......	डॉ. माधव मुंडकर	09
3	इक्कीसवीं सदी में बदलते कविता के स्वर	– कृष्णा आचार्य	12
4	पाठ एक काव्यात्मक अभिव्यक्ति	– डॉ. ए. एस. सुमेष	14
5	21वीं सदी का हिन्दी साहित्य में संवदेना के पक्ष	–डॉ. कृष्णकांत मिश्र	17
6	इक्कीसवीं सदी की सफल एकांकी 'जान से प्यारे'	–डॉ.पजई भांकर रामभाऊ	20
7	हिंदी दलित आत्मकथाएँ : एक विव..	–डॉ. मुनेश्वर एस. एल.–पाटील राहुल	25
8	'मैं हिजड़ा... मैं लक्ष्मी आत्मकथा में अभिव्यक्त...	प्रा.नानासोब म. गोफणे	7
9	21 वीं सदी और सामाजिक सरोकार की	प्रा. डॉ. अर्चना पत्की	30
10	ग्रेस कुजूर एवं निर्मला पुतुल की कविताओं में व्यक्त आदिवासी स्त्री की व्यथा–कथा......	प्रा. तोंडाकुर लक्ष्मण	33
11	पंछि फिरि फिरि आवें जहाज पर*.....	डॉ. पी. के. कोपार्डे	35
12	रूढ़िवादी संवेदना की अभिव्यक्ति 'ऐ गंगा	....प्रा. डॉ. रेविता बलभीम कावळे	39
13	'नंगा सत्य 'नाटक में दलित चेतना का सत्य	डॉ. सुभाष राठोड	42
14	अल्मा कबूतरी में आदिवासी विमर्श.......	प्रा. सुषमा नामे	45
15	इक्कीसवीं सदी का गजल साहित्य	–स.प्रा.मुजावर एस.टी.	48

16	"बंजारा जन जातियों के लोकगीत " – प्रा.डॉ.वंदन बापुराव जाधव	50
17	21 वीं सदी के हिंदी दलित उपन्यास – प्रा. डॉ. सुनीता कावळे	53
18	'इक्कीसवीं सदी की कविताओं में चित्रित – प्रा. हिरामण देवराम टोंगारे	56
19	हिंदी उपन्यास : सामाजिक सरोकार और – डॉ.पंडित बन्ने	59
20	दलित साहित्य की सशक्त रचना – डॉ. प्रकाश गायकवाड,डॉ. नितीन कुंभार	61
21	इक्कीसवी सदी की कविता में संवेदना के स्वर – डॉ. दत्ता साकोळे	65
22	हिंदी कहानियों में चित्रित वेश्या नारी का जीवन ... – प्रा. डॉ.चाटे तुकाराम	67
23	स्त्री जीवन की त्रासदी : यामिनी कथा – प्रा. डॉ. द्वारका गिते–मुंडे	70
24	गितांजलि श्री के 'माई' उपन्यास ... –डॉ.अलका डांगे–प्रा.विद्या खाडे	73
25	हिंदी साहित्य में आदिवासी विमर्श – प्रा.डॉ. पठाण आयुबखान जी.	75
26	21 वीं सदी के कथा साहित्य .. डॉ. विनोदकुमार विलासराव वायचळ 'वेदार्य'	79
27	विकास के नाम पर विनाश की कथा: 'ग्लोबल गाँव के..–डॉ. आर. एम. शिंदे	81
28	इक्कीसवीं सदी का कथा साहित्य – प्राचार्य डॉ.बी.डी.मुंडे	83
29	'ऐ गंगा तुम बहती हो क्यूँ ?' दलित –प्रा. डॉ. अभिमन्यू नरसिंगराव पाटील	87
30	समकालीन कविता मे अभिव्यक्त स्त्री विमर्श – डॉ.पंडित गायकवाड	90
31	इक्कीसवीं सदी के हिंदी साहित्य में 'पारधी' .... प्रा.डॉ.डमरे मोहन मुंजाभाऊ	93
32	स्त्रीवादी रचनाओं में स्त्री विमर्श – प्रा.डॉ. अरविंद अंबादास घोडके	96
33	आधुनिक हिन्दी मराठी दलित कविता में मानवाधिकार– डॉ॰ गौतम कांबळे	98
34	देवकीनंदन शुक्ल के उपन्यासों में सामाजिक ..–प्रा. गंगाधर बालन्ना उषमवार	102
35	इक्कीसवीं सदी की पड़ताल करती हिंदी लघुकथा – प्रा. सूर्यकांत रामचंद्र चव्हाण	105
36	भवानदास मोरवाल के उपन्यासों में राजनैतिक चेतना –प्रा. डिम्पल एस. पाटील	108
37	21 वीं सदी के कथा साहित्य के पारिवारिक परिदृश्य –डॉ. संतोष काळे	111

इक्कीसवीं सदी की पड़ताल करती हिंदी लघुकथा

प्रा. सूर्यकांत रामचंद्र चव्हाण
हिंदी विभाग
राजर्षि शाहू महाविद्यालय (स्वायत्त), लातूर

===

"चलिये मैं भी पूछता हूँ
क्या माँगूँ इस ज़माने से मीर
जो देता है भरे पेट को खाना
दौलतमंद को सोना, हत्यारे को हथियार,
बीमार को बीमारी, कमज़ोर को निर्बलता
अन्यायी को सत्ता
और व्यभिचारी को बिस्तर।"[1] — **उदय प्रकाश**

इन काव्य की पंक्तियों में उदय प्रकाश इक्कीसवीं सदी के समय की उन विसंगतिपूर्ण सच्चाई से रूबरू कराना चाहते हैं जहाँ समय में हम तो हैं किंतु समय हमारा नहीं है। विसंगति और विड़ंबनाओं से पूर्ण इस समय की घड़ी मिमियाती नजर आ रही है। टिक्–टिक् की आवाज जो उसके जिंदा होने का परिचायक है, वह आवाज भी आज नहीं गूँज रही। क्योंकि समय ने समय के साथ उस घड़ी के काँटों में उलटफेर कर दिया है। राजेश जोशी के शब्दों में–

"एकाएक अपनी कलाई पर बँधी घड़ी की तरफ़
गई मेरी नज़र
समय की टिक–टिक
मिमियाने में बदल चुकी थी वहाँ।"[2]

कविता जैसे संकेत करती है वैसे ही लघुकथा संकेतात्मकता के जरिए अनकही बात कह जाती है। कम शब्दों में, कम स्पष्टीकरण में जीवन के उस विराट सत्य को बारीकी से बुनावट करने में लघुकथा सक्षम होती है। आज के समय की नकाबओढ़ प्रवृत्ति को व्यक्त करती संतोष सुपेकर की 'सही सर्जरी' यह लघुकथा उतनी ही प्रासंगिक लगती है जितना की समय चाहता है। रोज शाम चौराहे पर जानवरों के तरह–तरह के मुखौटे बेचनेवाले को जब इंसानों के मुखौटे के बारे में पूछा जाता है तो उसका उत्तर मनुष्य के गिरगिटपन की ओर इशारा करता है– "ऐसा कैसा होगा? मेरी दुकान छोटी पड़ जाए इतने तो मुखौटे बदलता है, आज का इंसान।"[3] वहीं दूसरी ओर प्रषांत अग्निहोत्री की लघुकथा 'पुरानी कहानी का नया अंत' में राजनीति में सत्ता में बैठा राजा अब अधिक होशियार हो गया है। वह विकास की आड़ में अपने पंजों में जनता को कसना चाहता है। कहानी में जंगल का शेर अब वैसा वह पुराना शेर नहीं रहा जो खरगोश के कहने से कुएँ में अपना प्रतिबिंब देखकर दूसरे शेर की स्पर्धा में अपनी जान गँवा बैठे। किंतु अब शेर जनता की इस चालाकी को जान गया है। वह खरगोश को बताता है– "कुआं ढूँढ रहे हो....... मैं पुराने राजा की तरह मूर्ख नहीं, मैंने इतिहास से सबक लिया है। एक सच्चे नेता की तरह मैंने विकास के नाम पर कुआं पाट दिया, वहाँ टोंटी वाला नल लगवा दिया। इसी विकास के नाम पर मिले वोट से मैं जीता। अब सारे जानवर इसी नल से पानी पीते हैं, और पता है, इसके बदले में उनसे टैक्स लेता हूँ।"[4] यह कहकर शेर तुरंत खरगोश की ओर अपना पंजा बढ़ा देता है। यही आज के राजनीति की वास्तविकता है। विकास के नाम पर वोट बटोरना चाहे उस नल में पानी आये या ना आये इनसे उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता है।

आज सांप्रदायिक दंगों से व्यक्ति धर्म और जातियों में बँटा नजर आ रहा है। आजकल का सांप्रदायिक विस्फोट अचानक नहीं हो रहा। बल्कि यह एक षड्यंत्र या तैयार की गई रणनीति का हिस्सा बन गया है। धर्मोन्माद के कारण मनुष्यों में मानवीयता के बजाय पशुता आ गई है। कोई हिंदूत्व की त्रासदी से, कोई इस्लामियत की त्रासदी से, कोई कश्मिरीयत की त्रासदी से तो काई दलितत्व की त्रासदी से धीरे–धीरे मरने को ही जीना समझा बैठा है। इन सांप्रदायिक संबंधों के तनाव ने चिंतनीय मोड़ ले लिया है। आम जनता का सरकार पर अपनापन का विश्वास आज नहीं रहा। जहाँ हमने प्रकृति के रंगों को भी धर्मों में बाँट लिया है। बाबरी मस्जिद का ढ़हना, गोमांस–गोहत्या, रोहित वेमुला की आत्महत्या (?), जेएनयू का

ISSN : 2348-7143
February-2019

संघर्ष, भीमा–कोरेगांव का संघर्ष, भारत माता की जय कहने से इनकार, कश्मिरियों का 'जिंदा मुहावरों' की तरह रिसता दर्द और स्कूलों–महाविद्यालयों में धार्मिक षिक्षा देने और न देने पर हो रहा बवाल आदि सभी सांप्रदायिकता के ही विभिन्न रूप आज दिखाई देते हैं। सुदेश प्रभाकर की लघुकथा 'पूजा और नमाज' भी इसी विषय की ओर संकेत करती है। सांप्रदायिक दंगों से जल रहा शहर और तत्पश्चात् बंद रहे स्कूल कुछ दिनों के बाद खुल जाते हैं। स्कूल में जब शिक्षक छात्रों को 'पूजा' शब्द का विलोमार्थी शब्द पूछते हैं तो एक विद्यार्थी ने इसका उत्तर देते हुए कहा– ''सर! पूजा का विरोधी शब्द है नमाज।''[5] जिन स्कूलों में देश का भविष्य तय होता हो, जहाँ मासूम बच्चों को अच्छे संस्कारों से माँजा जाता हो वहाँ धर्म, संप्रदाय और जाति को लेकर नफरत, शंका और भय की दीवारें तेजी से खड़ी हो रही है। वहाँ ऐसी स्थिति में 'धर्म निरपेक्षता' शब्द मात्र संविधान के पन्नों में कैद रह जाएगा। सुदेश प्रभाकर की ही दूसरी लघुकथा 'रास्ते' में भी इसी विषय पर अपनी बेबाकी से इशारा करती है। पिताजी जब हर रोज काम से सायकिल पर आते हुऐ थक जाते हैं तो उसका बेटा उसे गुरूद्वारे के सामने से और मस्जिद के पीछे की सड़क से शॉर्टकट रास्ते से आने को कहते हैं। तब पिताजी का उत्तर आज के ज़हरीले और अविश्वासवाले समय की सच्चाई से रूबरू कराता है जो बड़ी चिंता की बात है– ''इधर से इसलिए नहीं आता कि आज–कल मंदिर, मस्जिद या गुरूद्वारे के पास बारूदें बिछी होती हैं, न जाने कब फट पड़ें।''[6]

आज का लघुकथाकार सामाजिक परिवेश में चल रहे उथल–पुथल को अपनी सृजन दृष्टि से पढ़कर उसे शब्दों की तीखी व्यंजना से संकेतात्मकता के साथ अभिव्यक्त करता है। किंतु साथ में रचनाकारों की सृजनधर्मिता और प्रसिद्धि–पुरस्कारों की फुहड़ता पर भी करारा प्रहार करता है। आज लेखकों– कवियों की 'साहित्य–साधना' के नाम पर पुरस्कारों और प्रसिद्धि पाने की बढ़ती लालसा और उनके ढोंग–ढकोसलों को भी लघुकथाकार नहीं छोड़ना चाहता। वह उसकी भी पोल खोलता है। राकेश रंजन की लघुकथा 'वरदान' में एकांत की मुद्रा में बैठे कवि महोदय को देखकर ब्रह्मा जी साधना समझाकर प्रसन्न हो जाते हैं और तीन वर माँगने को कहते हैं। कवि महोदय होशियार है वह ऐसे तीन वर माँगता है कि ब्रह्मा जी को इच्छा न होते हुए भी तथास्तु कहना पड़ता है। वे तीन वर ऐसे थे– ''हे प्रभु! हिंदी के अधिकांश आलोचक, संपादक और प्राध्यापक मेरी रचनाओं को पढ़े बगैर ही मुझे महान रचनाकार मान लें। मेरे अनर्गल प्रलाप भी महान सार्थक सिद्ध किए जाएँ!...... हिंदी की तमाम पत्र–पत्रिकाओं में मेरी तारीफों के पुल बाँधे जाएँ, मेरी प्रषस्तियाँ प्रकाषित हों!....... हिंदी के अधिकांश छोटे–बड़े सम्मान और पुरस्कार मुझे प्राप्त हो जाएँ।''[7]

आज हम बड़े नाजुक और भयानक दौर से गुजर रहे हैं। सुबह के समाचार पत्रों पर छपी चटपटी खबरों से लेकर रात के न्यूज चैनलों के ब्रेकिंग न्यूज की सनसनीखेज़ खबरों का आतंक हमारे दिलों–दिमाग में लगातार छाया रहता है। कभी अकबर इलाहबादी ने कहा था– 'जब तोप मुकाबिल हो तो अख़बार निकालो', इतना गहरा और दृढ़ विष्वास था मीडिया पर। किंतु आज टीआरपी की प्रतिद्वंद्विता नें उसे सेवा से व्यवसाय में तब्दील कर दिया है। जनता की आवाज कही जानेवाली पत्रिकारिता आज सत्ता की, जुबान बोलने लगी है। आज जनता की आवाज नीलाम हो चुकी है। हाल ही में एक बड़े न्यूज चैनल से पुण्यप्रसून वाजपेयी जैसे बड़े पत्रकार को निकाले जाना इसी का परिचायक है। गजेंद्र रावत की 'कवरेज' यह लघुकथा पत्रकारिता में बढ़ रही संवेदनहीनता पर कड़ा प्रहार करती है। ग्लोबल टी.वी. चैनल से निकाले जा चुके एक संवाददाता को किसी अन्य चैनल के इंटरव्यू में निकाले जाने का कारण पूछते हैं तब वह कहता है– ''दरअसल एक सड़क़ दुर्घटना की कवरेज के लिए मुझे भेजा गया था, लेकिन सड़क पर बुरी तरह घायल नौजवान का तड़पना मुझसे नहीं देखा गया....... और घटनास्थल की कवरेज के बजाय मैंने उसे अस्पताल पहुँचा दिया। इस प्रकार मुझ पर आरोप लगा कि मैंने एक सनसनीखेज़ ख़बर का सत्यानाष कर दिया। लिहाज़ा मुझे चैनल से निकाल दिया गया।''[8] लेकिन यह उत्तर सुनते ही फोन पर उसे मैसेज़ के जरिए बता दिया जाता है कि– ''फिलहाल आपको यह जॉब नहीं दी जाती, भविश्य के लिए षुभकामनाओं सहित–चेयरमैन।''[9] लोकतांत्रिक व्यवस्था का चौथा आधारस्तंभ कही जानेवाली पत्रकारिता चटपटी, सनसनीखेज़, विज्ञापनों और कामुक खबरों में अपने आप को धन्यता मानती है। बलराम अग्रवाल की लघुकथा 'सियाही' भी इसी विशय की ओर संकेत करती है। अख़बार के कार्यालयों में काम करनेवाले मंगल को जब माँ रोटी को अख़बार में लपेटकर देती है तो वह उसे मना करता है और किसी रूमाल में लपेटकर देने के लिए कहता है। माँ जब इसका कारण पूछती है तब वह उत्तर देता है– ''खाने बैठते ही निगाह रोटियों पर बाद में जाती है अम्मा, खबरों पर पहले जाती है। लुट–खसोट, हत्या–बलात्कार,

ISSN : 2348-7143
February-2019

उल्टी–सीधी, बयानबाजियाँ, घोटाले........ इतनी गंदी–गंदी खबरें सामने आ जाती है कि खाने से मन ही उचट जाता है।"[10] यह है इक्कीसवीं सदी का आज का समय और उस समय की पड़ताल करती आज की पत्रकारिता।

आज देष को स्वतंत्रता मिले इतने साल होने के बावजूद भी सत्ता पर आयी हर सरकार 'गरीबी हटाव' का नारा देती रहती है। लेकिन अब तक गरीबी हटी नहीं है। आर्थिक महासत्ता, षायनिंग इंड़िया, इंड़िया फर्स्ट, बूलेट ट्रेन, मेक इन इंड़िया, स्मार्ट सिटी के देष में हर जगह 'इंड़िया' तो है किंतु अपनी पत्नी की मृत्यु के पष्चात् ॲम्ब्यूलंस न मिलने पर अपनी पत्नी के षव को कोसों दूर अपने कंधों पर उठाकर ले जानेवाले मांझी, गरीबी और भूखमरी से मृत्यु को गला लगा रहे आदिवासी और चोक्सी, माल्या जैसे कर्जदारों पर रहम खा रही सरकारें ऋण के कारण आत्महत्या करनेवाले किसानों के 'भारत' पर कोई चिंता नहीं करती। हाल ही में हुए अंतरराश्ट्रीय राइट्स समूह 'ऑक्सफेम' द्वारा किये गए सर्वेक्षण से यह स्पश्ट है कि देष में 99 प्रतिषत लोगों के पास 1 प्रतिषत संपत्ति है और 1 प्रतिषत लोगों के पास 99 प्रतिषत संपत्ति। यही फर्क है इंड़िया और भारत के दरम्यान का। अषोक भाटिया की लघुकथा '73 करोड़ का हवाई जहाज' यह इंडिया और भारत की आर्थिक विशमता की खाई स्पश्ट करती है। तीन भूखे बच्चों की माँ जब खाली हाथ आये अपने पति को देखती है और अपना गुस्सा उनपर निकालती है तभी लेखक उस समय उसी 'इंड़िया' से रूबरू कराते हुए लिखते हैं– "यह वह समय था जब मुकेष अंबानी ने अपनी पत्नी को 73 करोड़ रूपए का हवाई जहाज तोहफे में दिया था......"[11] वहीं दूसरी ओर युगल किषोर 'चिंतित' की 'गरीब' इस लघुकथा में अमीरों की नक़ाबपोष जिंदगी और उनकी थोथी मानसिकता को उजागर करते हुए प्रतिश्ठित और अमीर कहे जानेवाले घरों में भ्रूणहत्याएँ कैसे होती है इसकी ओर संकेत करते हैं। ताराबाई जो एक बंगले की नौकरानी है। उसे चार बेटियाँ है, जिसपर उसे नाज़ है किंतु दिव्या जो इस बंगले की मालकिन है, वह उसे इस गरीबी के पीछे चार बेटी होने का अपना तर्क बताती है। तभी ताराबाई तपाक् से उसे उत्तर देती है– "लेकिन मालकिन..... मुझसे तो ज्यादा गरीब आप हैं, जो अमीर बने रहने की चाहत में अपनी चार बेटियों की कोख में ही हत्या कर दी। मैं तो फिर भी इन्हें पाल–पोस रही हूँ।"[12]

संदर्भ ग्रंथ :

1) पचास कविताएँ – उदय प्रकाश, वाणी प्र. नयी दिल्ली, प्रथम सं. 2012, पृ. 16–17.
2) ज़िद– राजेश जोशी, राजकमल प्र. नयी दिल्ली, पहला सं. 2015, पृ. 36.
3) हंस–संपा. राजेंद्र यादव, अक्षर प्र. नयी दिल्ली, अगस्त 2011, पृ. 98.
4) वही, अप्रैल 2011, पृ. 64.
5) लघु कथाएँ – सुदो प्रभाकर, खुराना एण्ड सन्स प्र. दिल्ली, सं. 2010, पृ. 12.
6) वही, पृ. 96.
7) हंस–संपा. राजेंद्र यादव, अक्षर प्र.नयी दिल्ली, अप्रैल 2011, पृ. 36.
8) वही, सितंबर 2011, पृ. 81.
9) वही
10) वही, जून 2011, पृ. 74.
11) वही, नवंबर 2011, पृ. 42.
12) वही, पृ. 18.

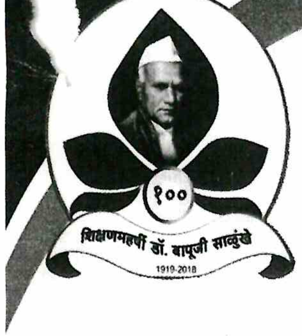

''ज्ञान, विज्ञान आणि सुसंस्कार यांसाठी शिक्षण प्रसार'' – शिक्षणमहर्षी डॉ.बापूजी साळुंखे

Shri Swami Vivekanand Shikshan Sanstha, Kolhapur'

TULJABHAVANI MAHAVIDYALAYA, TULJAPUR,

Tal- Tuljapur, Dist.Osmanabad-413601 (Maharashtra)

(In Collaboration with Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwada University, Aurangabad)

Birth Centenary Year of Dr. Bapuji Salunkhe 2018-19

One Day Interdisciplinary National Seminar on

"21 st Century English Prose Literature and New Thoughts"

"२१ वीं सदी का हिंदी गद्य साहित्य और विविध विमर्श"

CERTIFICATE

This is to certify that Prof./Dr./Shri./Smt. सुर्यकांत रामचंद्र चव्हाण

of राजर्षी शाहू महाविद्यालय (स्वायत्त) लातूर

has participated in One Day Interdisciplinary National Seminar on Friday, 8th February, 2019 as a Key Note Addressee/Chair Person/Resource Person/ Participant. He/She has presented the paper entitled,

" "बाजारवाद की चुनौतियों पर चिंतन करती हिंदी लघुकथा" ."

Prof. V. H. Chavan	**Maj. Dr. Y. A. Doke**	**Principal Dr. S. M. Maner**
Dept. of Hindi	Head, Dept.of English	**Convener**
Coordinator	**Coordinator**	